भारत में महिलाओं की बदलती सामाजिक स्थिति और सशक्तिकरण की जरूरत

-अम्बुज आजाद

हाल के दशकों में, भारत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखा गया है। ऐतिहासिक रूप से परिवार और समाज के भीतर पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित, महिलाएं अब बाधाओं को तोड़ रही हैं और विभिन्न क्षेत्रों में अपनी भूमिकाओं को फिर से परिभाषित कर रही हैं। हालाँकि, काफी प्रगति के बावजूद, चुनौतियाँ बरकरार हैं, जिससे महिला सशक्तीकरण के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है। महिलाओं की सामाजिक स्थिति में उल्लेखनीय बदलावों में से एक शिक्षा में स्पष्ट है। महिलाओं के बीच बढ़ती साक्षरता दर अतीत से विचलन को दर्शाती है, जहां लड़कियों की शिक्षा को अक्सर गौण माना जाता था।

आज, भारत में महिलाएं विज्ञान और प्रौद्योगिकी से लेकर कला और साहित्य तक विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही हैं। हालाँकि, शैक्षिक प्राप्ति में लैंगिक असमानताएँ बनी हुई हैं, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, शिक्षा तक समान पहुंच सुनिश्चित करने के लिए लक्षित हस्तक्षेप की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है। रोजगार के क्षेत्र में, महिलाओं ने पारंपरिक रूप से पुरुषों के प्रभुत्व वाले व्यवसायों में प्रवेश करके प्रगति की है। कभी पुरुष प्रधान कॉरपोरेट सेक्टर में धीरे-धीरे महिला नेताओं की आमद देखी जा रही है। हालाँकि, लिंग वेतन अंतर बरकरार है, जो ऐसी नीतियों की आवश्यकता को रेखांकित करता है जो वेतन समानता को बढ़ावा देती हैं और कार्यस्थल भेदभाव को संबोधित करती हैं। इसके अतिरिक्त, काम और पारिवारिक ज़िम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाने जैसी चुनौतियाँ महिलाओं के करियर में आगे बढ़ने में बाधक बनी हुई हैं।

राजनीतिक भागीदारी महिलाओं की सामाजिक स्थिति में एक और उल्लेखनीय बदलाव का प्रतीक है। स्थानीय शासन निकायों में महिलाओं के लिए सीटों के आरक्षण से राजनीतिक प्रतिनिधित्व में वृद्धि हुई है। फिर भी, राष्ट्रीय स्तर पर, निर्णय लेने वाली भूमिकाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व कम है। राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करना, एक सहायक माहौल को बढ़ावा देना और नेतृत्व की स्थिति में वास्तविक लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिए स्थापित पितृसत्तात्मक मानदंडों को खत्म करना आवश्यक है। इन प्रगति के बावजूद, लिंग आधारित हिंसा की छाया बड़ी है। घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न और हमले की घटनाएं व्यापक बनी हुई हैं, जिन पर तत्काल ध्यान देने की

 ISSN:2583-8849

आवश्यकता है। कानूनी ढांचे को मजबूत करना, त्वरित न्याय सुनिश्चित करना और महिलाओं के खिलाफ हिंसा की निंदा करने वाली संस्कृति को बढ़ावा देना एक सुरक्षित समाज बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। इसके अलावा, लिंग आधारित हिंसा को कायम रखने वाली गहरी जड़ें जमा चुकी सामाजिक मनोवृत्ति को खत्म करना स्थायी परिवर्तन के लिए सर्वोपरि है। महिलाओं को सशक्त बनाने में स्वास्थ्य संबंधी असमानताओं को दूर करना भी शामिल है। जबकि मातृ स्वास्थ्य कार्यक्रमों ने प्रगति की है, कुपोषण, अपर्याप्त स्वास्थ्य देखभाल पहुंच और प्रजनन अधिकार जैसे मुद्दे बरकरार हैं। जागरूकता अभियानों के साथ व्यापक स्वास्थ्य देखभाल पहल, महिलाओं की भलाई सुनिश्चित करने के लिए जरूरी है।

भारत में महिलाओं को और सशक्त बनाने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाना होगा। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, शैक्षिक सुधारों को लिंग आधारित असमानताओं को लक्षित करना चाहिए, जिससे सभी क्षेत्रों में लड़कियों के लिए समान अवसर सुनिश्चित हों। कम उम्र से ही लैंगिक समानता के महत्व के प्रति समुदायों को संवेदनशील बनाने से रूढ़िवादिता को तोड़ने और अधिक समावेशी समाज को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है। कार्यस्थल नीतियों में लैंगिक समानता को प्राथमिकता देनी चाहिए, वेतन अंतर को कम करने और विविधता को बढ़ावा देने के उपायों को लागू करना चाहिए। कंपनियां एक सहायक वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं जो कामकाजी महिलाओं की जरूरतों को पूरा करती है, उनके पेशेवर विकास को सुविधाजनक बनाती है। राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता होती है। अधिक व्यापक सकारात्मक कार्रवाई उपायों को लागू करना और महत्वाकांक्षी महिला नेताओं के लिए परामर्श कार्यक्रम बनाना अधिक प्रतिनिधि राजनीतिक परिदृश्य में योगदान दे सकता है।

लिंग आधारित हिंसा के खिलाफ लड़ाई के लिए कानूनी और सामाजिक दोनों दृष्टिकोण से ठोस प्रयास की आवश्यकता है। कानूनी ढांचे को मजबूत करना, पीड़ितों के लिए सहायता प्रणाली प्रदान करना और हिंसा के प्रति शून्य सहिष्णुता की संस्कृति को बढ़ावा देना इस लड़ाई में महत्वपूर्ण कदम हैं। निष्कर्ष में, जबकि भारत में महिलाओं की बदलती सामाजिक स्थिति स्पष्ट है, अभी भी बहुत काम किया जाना बाकी है। सच्ची महिला सशक्तिकरण प्राप्त करने के लिए शिक्षा, रोजगार, राजनीति, स्वास्थ्य सेवा और लिंग आधारित हिंसा के उन्मूलन में निरंतर प्रयास आवश्यक हैं। केवल एक व्यापक और निरंतर दृष्टिकोण के माध्यम से ही भारत एक ऐसे समाज का निर्माण कर सकता है जहां महिलाओं को समान अधिकार और अवसर प्राप्त हों।